श्री कामेश्वर सिंह 'सहायक प्रोफेसर'
राजनीति विज्ञान, रोहतास महिला कालेज सासाराम।
वर्ग - बी०ए० पार्ट - I (प्रतिष्ठा)
पत्र - Ist (प्रथम)
राजनीति सिद्धान्त ; डॉ० पुखराज जैन
दिनांक - 02-06-2020.

Question :→ Define political science and show its Scope.
(राजनीति विज्ञान की परिभाषा दें और इसके क्षेत्र बतावें)

Ans :→ किसी भी विषय की जानकारी प्राप्त करने के लिए सबसे पहले उसकी परिभाषा जानना अनिवार्य हो जाता है। राजनीति विज्ञान की परिभाषा के बारे में गार्नर ने कहा है कि "राजनीति विज्ञान के जितने लेखक हैं उतनी ही इसकी परिभाषाएँ हैं।" जेलिनेक के अनुसार "राजनीति विज्ञान के अलावा अन्य कोई ऐसा विज्ञान नहीं है जिसे अपने लिए शब्दावली की इतनी अधिक आवश्यकता है।" राजनीतिशास्त्र की परिभाषाओं का अध्ययन दो दृष्टिकोणों से किया जा सकता है —

परम्परावादी एवम् आधुनिक दृष्टिकोण :—

पारम्परिक परिभाषाएँ :— राजनीतिशास्त्र की पारम्परिक परिभाषाओं को भी कई श्रेणियों में बाँटा जा सकता है जो —

(i) शब्द-व्युत्पत्ति की दृष्टि से :— 'राजनीति शास्त्र' शब्द अंग्रेजी के Political Science शब्द का हिन्दी रूपान्तर और राजनीति (Politics) शब्द यूनानी भाषा के पोलिस का हिन्दी अनुवाद है, जिसका अर्थ नगर राज्य होता है। प्राचीन यूनान के छोटे-छोटे नगर राज्य के अध्ययन करनेवाले शास्त्र को पॉलिटिक्स कहा जाता था।

(ii) भारतीय विद्वानों के अनुसार :→ प्राचीन काल में भारतीय आचार्यों ने राजनीतिशास्त्र को दण्डनीति कहते थे। प्राचीन काल में दण्ड का अर्थ राजा से नहीं था। जो विद्या उस राज्य का शासन और दण्ड का प्रतिपादन करती है वही दण्डनीति है। अतः भारतीय शास्त्रों के अनुसार भी राजनीतिशास्त्र राज्य विषयक शास्त्र है।

(iii) आधुनिक विद्वानों के अनुसार :→ आधुनिक युग में राजनीतिशास्त्र की प्रकृति एवम् विस्तार के सम्बन्ध में काफी परिवर्तन हुए हैं। इन परिवर्तनों को ध्यान में रखकर आधुनिक विद्वानों ने विभिन्न परिभाषाएँ प्रस्तुत की है जिन्हें तीन वर्गों में रखा जा सकता है —

(क) राज्य के अध्ययन के रूप में —
(ख) सरकार के अध्ययन के रूप में —
(ग) राज्य और सरकार दोनों के अध्ययन के रूप में —

(क) राज्य के अध्ययन के रूप में — आधुनिक विद्वानों ने राजनीतिशास्त्र को केवल राज्य के अध्ययन के रूप में स्वीकार किया है।

गार्नर के शब्दों में — "राजनीतिशास्त्र का आरम्भ और अन्त राज्य से होता है।"

ब्लंटशली के अनुसार :— "राजनीतिशास्त्र वह विज्ञान है जो राज्य की आधारभूत स्थितियों, उसकी प्रकृति एवं विविध स्वरूप तथा विकास को समझने का प्रयास करता है।"

गैरिस ने कहा है — "राजनीतिशास्त्र एक ज्ञानसम्पन्न संस्था के रूप में राज्य के समस्त सम्बन्धों, उसकी उत्पत्ति, परिस्थितियों, उसके लक्ष्यों, नैतिक महत्व एवम् आर्थिक समस्याओं आदि का उल्लेख करता है।"

उपर्युक्त परिभाषाओं में केवल राज्य की चर्चा की गयी है जबकि सरकार के अभाव में राज्य की कल्पना करना असंभव है —

(ख) सरकार के अध्ययन के रूप में :- इस-

कई के लोग केवल राजनीति शास्त्र को सरकार के अध्ययन के रूप में मानते हैं। इस श्रेणी के लेखकों में प्रमुख नाम लीकॉक और सीले आदि हैं –

लीकॉक के अनुसार :→ "राजनीति शास्त्र सरकार से सम्बन्धित विद्या है।"

सीले के अनुसार → "राज्य-विज्ञान शासन सम्बन्धी बातों पर ठीक उसी प्रकार विचार करता है जिस प्रकार अर्थशास्त्र सम्पत्ति, जीवविज्ञान जीवन एवं बीजगणित अंकों तथा रेखागणित स्थान एवं परिमाण के सम्बन्धों में।"

उपर्युक्त दोनों परिभाषाओं से हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि यह परिभाषाएँ अधूरी ही है।

(ग) राज्य और सरकार दोनों के रूप में :- इस श्रेणी में पॉल जेनेट, गैटेल आदि विचारक आते हैं-

पॉल जेनेट का कहना है - "राजनीतिशास्त्र समाज शास्त्र का वह अंग है जो राज्य के आधार पर शासन के सिद्धान्तों की विवेचना करता है।"

आधुनिक परिभाषाएँ :- द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद राजनीति शास्त्र के अध्ययन में एक नई विचारधारा का जन्म हुआ है। इसके साथ ही राजनीतिशास्त्र का अर्थ भी बदल गया है। इसे व्यवहारवादी विचारधारा कहते हैं। इस विचारधारा के अनुसार राजनीतिविज्ञान केवल राज्य और सरकार का ही अध्ययन नहीं करता है बल्कि मानव के व्यवहार का भी अध्ययन करता है। आधुनिक परिभाषाएँ में सबसे अच्छा परिभाषा लासवेल और कापलान की मानी जाती है-

लासवेल और कापलान के शब्दों में — "राजनीति विज्ञान एक अनुभववादी विज्ञान है तथा इसका मुख्य उद्देश्य शक्ति के निर्धारण एवं शक्ति की सहभागिता का अध्ययन करना है।"

क्रमशः -----

Scanned by CamScanner